हिन्दी विभाग
स्नातक - तृतीय (III)
पत्र संख्या - VIII

* हिन्दी नाटक का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:- हिन्दी में नाट्य लेखन का प्रारंभ भी सही अर्थों में आधुनिक काल में ही संभव हो सका, इसके पूर्व नाट्य कृतियाँ प्राणचंद चौहान द्वारा 'रामायण महानाटक', लालिराम कृत 'करुणाभरण', महाराजा विश्वनाथ कृत आनन्द रघुनन्दन इत्यादि का उल्लेख मिलता है। आनन्द रघुनन्दन को हिन्दी की प्रथम नाट्यकृति इस आधार पर स्वीकार किया जाता है, क्योंकि इसके संवाद गद्य में है और साथ ही इसमें शास्त्रीय नियमों के अनुशरण जैसे काव्य आदि का प्रयोग किया गया है और रंग-निर्देश भी किये गए है। 'आनन्द रघुनन्दन' के बाद भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के पिता गिरिधरदास द्वारा रचित 'नहुष' नाटक भी उल्लेखनीय है। वस्तुतः ये नाटक न होकर पद्यात्मक प्रबंध है जिनमें नाट्य गुणों का अभाव है।

अपने युग के नाटककारों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ही हैं। खड़ी बोली में नाटक लिखने का सूत्रपात उन्हीं द्वारा ही हुआ। इस युग में रामलीला, रासलीला का प्रचलन था। हिन्दी नवोत्थान की भावना से प्रेरित होकर भारतेन्दु नाट्य लेखन की ओर अग्रसर हुए और युगीन आवश्यकताओं के अनुरूप उन्होंने नाटक में प्राच्य और पाश्चात्य दोनों तत्वों का समावेश किया है। खड़ी बोली का यह ढाँचा प्राचीनता के उत्कर्ष और नवीनता के उपादेय तत्वों से निर्मित था। मौलिक और अनूदित कुल मिलाकर 17 नाटकों की रचना भारतेन्दु ने की, जिनमें कर्पूरमंजरी, मुद्राराक्षस, दुर्लभबंधु भारत-दुर्दशा, अन्धेर नगरी आदि उल्लेखनिय है।

नाट्य सृजन और अभिनय की भारतीय परम्परा अत्यन्त पुरानी है। 11वीं, 12वीं शताब्दी तक आते-आते नाट्य लेखन रंग-मंच से जीवन्त सम्पर्क से कट गया। नाटक इतिवृत्तमूलक संवादात्मक काव्य का रूप ग्रहण करने लगे।

भारतेन्दु के समय में या उनके बाद हिन्दी क्षेत्र में नाटक या तो व्यावसायिक पारसी मंडलियों के द्वारा खेले जाते थे या कुछ प्रबुद्ध साहित्यकारों और साहित्य प्रेमियों के द्वारा। इस प्रकार व्यावसायिक और शौकिया दोनों रंगमंचों का अस्तित्व बना रहा। व्यावसायिक नाटक मंडलियों के कथानक दो प्रकार के थे — पौराणिक धार्मिक या तिलस्मी। ऐसे नाटक लिखने वालों में नारायण प्रसाद 'बेताब' आगाहश्र, 'कश्मीरी' सर्वाधिक प्रसिद्ध थे।

बीसवीं शदी के आरंभिक दशकों में दोनों प्रकार का नाट्य लेखन चलता रहा। भारतेन्दु की साहित्यिक परम्परा में आगे आनेवालों में माधव प्रसाद शुक्ल, जमुना प्रसाद मेहरा, माखन लाल चतुर्वेदी आदि उल्लेखनीय हैं। प्रसाद के पूर्व तक पारसी रंगमंच का प्रभाव हिन्दी नाट्य साहित्य पर हावी रहा। दोनों ओर से नाटककारों ने दो पक्ष मुख्यतः चुने हुए भी ऐसे चुने गये जिनमें शृंगार, वीर रस या करुण रस का प्राधान्य हो। प्रसाद के प्रादुर्भाव के साथ ही नाटक में गुणात्मक परिवर्तन हुआ। सपाट भाषा की तुलना में लाक्षणिक

और अधिक सम्पन्न भाषा का प्रयोग उन्होंने नाटकों में किया। इसी के समानान्तर देवता और राक्षस ध्रुवों से हटकर अधिक मानवीय चरित्रों को उन्होंने प्रस्तुत किया। जिनमें अच्छाई और बुराई दोनों का समावेश है और इसलिए उनमें संघर्ष और अन्तर्द्वन्द्व चलता रहता है। मनोरंजन उद्देश्य या ललित भाव की तुलना में प्रसाद के नाटक बराबर एक बौद्धिक विचार धारा का आधार लेते हैं।

प्रस्तुत कर्ता

बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)

हिन्दी विभाग

राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर

(BRABU MUZAFFARPUR)

मो० - 8292271041

ईमेल - benamkumar13@gmail.com